



# CENTRAL UNIVERSITY OF RAJASTHAN

## CENTRAL LIBRARY



### RASHTRIYA EKTA DIWAS

**Bibliography**

**Compiled By**

**Team Central Library**

Every year, on 31st October, the country celebrates National Unity Day (Rashtriya Ekta Diwas). It is the birth anniversary of Sardar Vallabhbhai Patel, also known as the “Iron Man of India.”

He was a brave leader who worked hard to unite India after independence. Before 1947, India was divided into many princely states. Sardar Patel brought them all together to make one strong, united nation. In 2025, this day becomes even more special — it marks 150 years since his birth! Across India, people will remember him through unity runs, speeches, and cultural events that remind us — “We are many, but we are one India.”

### **Why is National Unity Day Celebrated?**

National Unity Day is celebrated to honour Sardar Vallabhbhai Patel’s great work of uniting India.

After independence, India had more than 560 princely states. Many of them wanted to stay separate. But Patel, with his strong will and wise talks, convinced almost all of them to join the Indian Union.

He proved that “Unity is our strength.”

The Government of India started celebrating this day in 2014 to remind everyone — students, youth, and citizens — that we must stay united and work together for our country.

### **Know more about Sardar Vallabhbhai Patel**

Sardar Vallabhbhai Patel was born on **31 October 1875** in the small village of Nadiad, Gujarat. He was the son of a farmer but became one of the most respected leaders in India.

He worked closely with **Mahatma Gandhi** and played a key role in India’s freedom struggle. After independence, he became **India’s first Deputy Prime Minister and Home Minister**.

People called him the “**Iron Man of India**” because of his strong determination and courage.

<b>Particulars</b>	<b>Details</b>
Full Name	Vallabhbhai Jhaverbhai Patel
Born	31 October 1875, Nadiad (Gujarat)
Died	15 December 1950
Popularly Known as	Iron Man of India

Particulars	Details
Major Role	United 565 princely states after independence
Important Movements	Kheda, Bardoli and Salt Satyagraha
Award	Bharat Ratna (1991)
Memorial	Statue of Unity (World's tallest statue – 182 m)
Famous Quote	“Manpower without unity is not a strength.”

- DOCUMENTARY ON THE LIFE OF SARDAR VALLABH BHAI PATEL

1. Documentary - Life of Sardar Vallabhbhai Patel

<https://www.youtube.com/watch?v=O1RSSMBUcoE>

2. सरदार पटेल : भारत के लौह पुरुष | Sardar Patel: The Iron Man of India

<https://www.youtube.com/watch?v=JEkUfx-UvM4>

3. How Sardar Vallabhbhai Patel united India? History of Reorganisation of States in India | UPSC

<https://www.youtube.com/watch?v=rD4p1-DRXMs&t=15s>

4. How Sardar Vallabhbhai Patel united India? History of Reorganisation of States in India

<https://youtu.be/rD4p1-DRXMs>

## **National Unity Day Pledge | Ekta Diwas Pledge**

### **राष्ट्रीय एकता दिवस शपथ**

मैं सत्यनिष्ठा से शपथ लेता हूँ कि मैं राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा को बनाए रखने के लिए स्वयं को समर्पित करूँगा और अपने देशवासियों के बीच यह संदेश फैलाने का भी भरसक प्रयत्न करूँगा। मैं यह शपथ अपने देश की एकता की भावना से ले रहा हूँ जिसे सरदार वल्लभभाई पटेल की दूरदर्शिता एवं कार्यो द्वारा संभव बनाया जा सका। मैं अपने देश की आंतरिक सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपना योगदान करने का भी सत्यनिष्ठा से संकल्प करता हूँ।

### **RASHTRIYA EKTA DIWAS PLEDGE**

I solemnly pledge that I dedicate myself to preserve the unity, integrity and security of the nation and also strive hard to spread this message among my fellow countrymen. I take this pledge in the spirit of unification of my country which was made possible by the vision and actions of Sardar Vallabhbhai Patel. I also solemnly resolve to make my own contribution to ensure internal security of my country.

### **Books (Available in our Library)**

1. Sikata, Panda. Political Ideas of Sardar Vallabhbhai Patel. Delhi: Kalpaz Publications, 2014
2. Sardar Vallabhbhai Patel edited by M.H. Syed, Anil Kathuria, Bharat Singh. Mumbai: Himalaya Books 2013
3. Sardar the sovereign saint. Joshi, Dinakar. Ocean Books Pvt. Ltd. New Delhi.
4. लोहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल सुशिल कपूर  
by कपूर, सुशिल.  
नयी दिल्ली विधा विहार 2013
5. यतीन्द्रनाथ चतुर्वेदी . लोकतंत्र के लौहपुरुष सरदार बल्लभ भाई पटेल . UP: Akshar Plant.
6. अग्रवाल, मीना. राष्ट्रीय जीवनी माला सरदार पटेल. New Delhi : Diamond Books

### **Quotes**

1. "आपकी अच्छाई आपके मार्ग में बाधक है, इसलिए अपनी आँखों को क्रोध से लाल होने दीजिये, और अन्याय का सामना मजबूत हाथों से कीजिये।"
2. "अधिकार मनुष्य को तब तक अंधा बनाये रखेंगे, जब तक मनुष्य उस अधिकार को प्राप्त करने हेतु मूल्य न चुका दे।"
3. "मेरी एक ही इच्छा है कि भारत एक अच्छा उत्पादक हो और इस देश में कोई अन्न के लिए आंसू बहाता हुआ भूखा ना रहे।"
4. "जब जनता एक हो जाती है, तब उसके सामने क्रूर से क्रूर शासन भी नहीं टिक सकता। अतः जात-पात के ऊँच-नीच के भेदभाव को भुलाकर सब एक हो जाइए।"

5. "संस्कृति समझ-बूझकर शांति पर रची गयी है. मरना होगा तो वे अपने पापों से मरेगो जो काम प्रेम, शांति से होता है, वह वैर-भाव से नहीं होता।"
6. "अविश्वास भय का प्रमुख कारण होता है।"
7. "उतावले उत्साह से बड़ा परिणाम निकलने की आशा नहीं रखनी चाहिये।"
8. "मान-सम्मान किसी के देने से नहीं मिलते, अपनी योग्यतानुसार मिलते हैं।"
9. "सत्य के मार्ग पर चलने हेतु बुरे का त्याग अवश्यक है, चरित्र का सुधार आवश्यक है।"
10. "सेवा करने वाले मनुष्य को विनम्रता सीखनी चाहिए, वर्दी पहन कर अभिमान नहीं, विनम्रता आनी चाहिए।"
11. "प्रजा का विश्वास, राज्य की निर्भयता की निशानी है।"
12. "मनुष्य को ठंडा रहना चाहिए, क्रोध नहीं करना चाहिए. लोहा भले ही गर्म हो जाए, हथौड़े को तो ठंडा ही रहना चाहिए अन्यथा वह स्वयं अपना हत्था जला डालेगा. कोई भी राज्य प्रजा पर कितना ही गर्म क्यों न हो जाये, अंत में तो उसे ठंडा होना ही पड़ेगा.
13. अक्सर मैं, ऐसे बच्चे जो मुझे अपना साथ दे सकते हैं, के साथ हंसी-मजाक करता हूँ। जब तक एक इंसान अपने अन्दर के बच्चे को बचाए रख सकता है तभी तक उसका जीवन उस अंधकारमयी छाया से दूर रह सकता है, जो इंसान के माथे पर चिंता की रेखाएं छोड़ जाती है।
14. अगर आपके पास शक्ति की कमी है तो विश्वास किसी काम का नहीं। क्योंकि महान उद्देश्यों की पूर्ति के लिए, शक्ति और विश्वास दोनों का होना जरूरी है।
15. आपके घर का प्रबंध दूसरों को सौंपा गया हो तो यह कैसा लगता है, यह आपको सोचना है जब तक प्रबंध दूसरों के हाथ में है तब तक परतन्त्रता है और तब तक सुख नहीं।

16. एकता के बिना जनशक्ति, शक्ति नहीं है। जब तक उसे ठीक तरह से सामंजस्य में न लाया जाए और एकजुट न किया जाए।
17. कठिन समय में कायर बहाना ढूंढते हैं तो वहीं, बहादुर व्यक्ति रास्ता खोजते हैं।
18. कठोर-से-कठोर हृदय को भी प्रेम से वश में किया जा सकता है। प्रेम तो प्रेम है। माता को अपना काना-कुबड़ा बच्चा भी सुंदर लगता है और वह उससे असीम प्रेम करती है।
19. कर्तव्यनिष्ठ पुरुष कभी निराश नहीं होता। अतः जब तक जीवित रहें और कर्तव्य करते रहें, तो इसमें पूरा आनन्द मिलेगा।
20. किसी तन्त्र या संस्थान की पुनः निंदा की जाए तो वह ढीठ बन जाता है और फिर सुधरने की बजाय निंदक की ही निंदा करने लगता है।
21. स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद भी यदि परतन्त्रता की दुर्गन्ध आती रहे, तो स्वतन्त्रता की सुगंध नहीं फैल सकती।
22. गरीबों की सेवा ही ईश्वर की सेवा है।
23. जब तक हमारा अंतिम ध्येय प्राप्त ना हो जाए तब तक उत्तरोत्तर अधिक कष्ट सहन करने की शक्ति हमारे अन्दर आये, यही सच्ची विजय है।
24. जो तलवार चलाना जानते हुए भी अपनी तलवार को म्यान में रखता है उसी को सच्ची अहिंसा कहते हैं।
25. जो मनुष्य सम्मान प्राप्त करने योग्य होता है, वह हर जगह सम्मान प्राप्त कर लेता है, पर अपने जन्म-स्थान पर उसके लिए सम्मान प्राप्त करना कठिन ही है।
26. त्याग के मूल्य का तभी पता चलता है, जब अपनी कोई मूल्यवान वस्तु छोड़नी पड़ती है। जिसने कभी त्याग नहीं किया, वह इसका मूल्य क्या जाने।
27. थका हुआ इंसान दौड़ने लगे तो स्थान पर पहुँचने के बजाय जान गंवा बैठता है, ऐसे समय पर आराम करना और आगे बढ़ने की ताकत जुटाना उसका धर्म हो जाता है।

28. प्राण लेने का अधिकार तो ईश्वर को है। सरकार की तोप या बंदूकें हमारा कुछ नहीं कर सकतीं। हमारी निर्भयता ही हमारा कवच है।
29. बोलने में मर्यादा मत छोड़ना, गालियाँ देना तो कायरों का काम है।
30. बेशक कर्म पूजा है किन्तु हास्य जीवन है। जो कोई भी अपना जीवन बहुत गंभीरता से लेता है। उसे एक तुच्छ जीवन के लिए तैयार रहना चाहिए। जो कोई भी सुख और दुःख का समान रूप से स्वागत करता है वास्तव में वही सबसे अच्छी तरह से जीता है।
31. हर जाति या राष्ट्र खाली तलवार से वीर नहीं बनता तलवार तो रक्षा-हेतु आवश्यक है, पर राष्ट्र की प्रगति को तो उसकी नैतिकता से ही मापा जा सकता है।
32. यह भारत के प्रत्येक नागरिक का कर्तव्य है कि वह अनुभव करे कि उसका देश स्वतन्त्र है और देश की स्वतंत्रता की रक्षा करना उसका कर्तव्य है। अब हर भारतीय को भूल जाना चाहिए कि वह सिख हैं, जाट है या राजपूत। उसे केवल इतना याद रखना चाहिए कि अब वह केवल भारतीय हैं जिसके पास सभी अधिकार हैं, लेकिन उसके कुछ कर्तव्य भी हैं।
33. विश्वास रखकर आलस्य छोड़ दीजिये, वहम मिटा दीजिये, डर छोड़िये, फूट का त्याग कीजिये, कायरता निकाल डालिए, हिम्मत रखिये, बहादुर बन जाइए, और आत्मविश्वास रखना सीखिए। इतना कर लेंगे तो आप जो चाहेंगे, अपने आप मिलेगा। दुनिया में जो जिसके योग्य है, वह उसे मिलता ही है।
34. शारीरिक और मानसिक शिक्षा साथ-साथ दी जाये, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षा इस तरह की हो जो छात्र के मन का, शरीर का, और आत्मा का विकास करे।
35. सच्चे त्याग और आत्मशुद्धि के बिना स्वराज नहीं आएगा। आलसी, ऐश-आराम में लिप्त के लिए स्वराज कहाँ। आत्मबल के आधार पर खड़े रहने को ही स्वराज कहते हैं।

36. सत्ताधीशों की सत्ता उनकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हो जाती है, पर महान देशभक्तों की सत्ता मरने के बाद काम करती है, अतः देशभक्ति अर्थात् देश-सेवा में जो मिठास है, वह और किसी चीज में नहीं।
37. दुःख उठाने के कारण प्रायः हममें कटुता आ जाती है, द्रष्टि संकुचित हो जाती है और हम स्वार्थी तथा दूसरों की कमियों के प्रति असहिष्णु बन जाते हैं। शारीरिक दुःख से मानसिक दुःख अधिक बुरा होता है।
38. Today we must remove distinctions of high and low, rich and poor, caste or creed.  
**(Date: 21 January 1942, Occasion: During Quit India Movement)**
39. We have to shed mutual bickering, shed the difference of being high or low and develop the sense of equality and banish untouchability. We have to restore the conditions of Swaraj prevalent prior to British rule. We have to live like the children of the same father.  
**(Date: 21 January 1942, Occasion: During Quit India Movement)**
40. In a domestic Government unity and co-operation are essential requisites. **(Date: 6 March 1949, Occasion: An appeal to the East Punjab Govt. on arrest of Tara Singh)**
41. No distinctions of caste and creed should hamper us. All are the sons and daughters of India. We should all love our country and build our destiny on mutual love and help.  
**(Date: 19 September 1950, Occasion: Addressing the Session of the Maharashtra Youth Congress at Nasik)**
42. The negligence of a few could easily send a ship to the bottom, but it required the whole-hearted co-operation of all on board; she could be safely brought to port.  
**(Date: 14 May 1928, Occasion: To villagers of Bardoli taluka during Bardoli Movement)**
43. Happiness and misery are paper balls. Don't be afraid of death. Join the nationalist forces, be united. Give work to those who are hungry, food to invalids, forget your quarrels.  
**(Date: 7 March 1942, Occasion: During Quit India Movement)**
44. As satyagrahis we should always claim and we did – that we are always ready to make peace with our adversaries. As a matter of fact we are always eager for peace and when we found that the door to peace was opened we decided to enter it.

***(Date: 5 April 1931, Occasion: During his address on Bhagat Singh, Rajguru and Sukhdev at Karachi Congress Session)***

45. A war based on Satyagraha is always of two kinds. One is the war we wage against injustice and the other we fight against our own weaknesses.  
***(Date: 28 April 1935, Occasion: Addressing the Kisan Conference at Allahabad, U.P.)***
46. Satyagraha is not a creed for the weak or the cowardly.  
***(Date: 28 April 1935, Occasion: Addressing the Kisan Conference at Allahabad, U.P.)***
47. Non-violence has to be observed in thought, word and deed. The measure of our non-violence will be the measure of our success. ***(Date: 26 January 1939, Occasion: Announcing resumption of the struggle at Rajkot)***
48. One can take the path of revolution but the revolution should not give a shock to the society. There is no place for violence in revolution. ***(Date: 19 February 1939, Occasion: Addressing the Students at Gujarat Vidyapith)***
49. The war started by Mahatmaji is against two things – the Government and secondly against one self. The former kind of war is closed, but the latter shall never cease. It is meant for self-purification.  
***(Date: 2 January 1935, Occasion: Advising the farmers at Ahmedabad after the close of Civil Disobedience Movement)***
50. I am blunt and uncultured. To me there is only one answer to this questions. That answer is not that you should shut yourselves in colleges and learn history and mathematics while the country is on fire and everybody is fighting freedom's battle. Your place is by the side of your countrymen, who are fighting the freedom's battle.  
***(Date: 5 July 1930, Occasion: Addressing gathering of College Students at Bombay)***
51. Ours is a non-violent war, It is Dharma YUDDHA.  
***(Date: 21 July 1930, Occasion: Addressing gathering of women at Mandvi, Bombay)***
52. So long as you do not know how to die it is useless for you to learn how to kill. India will not be benefited by brutal force. If India is to be benefited it will be through non-violence.  
***(Date: 5 August 1928, Occasion: Addressing Students at Surat)***

53. Two ways of building character – cultivating strength to challenge oppression, and tolerate the resultant hardships that give rise to courage and awareness.  
**(Date: 13 June 1935, Occasion: Vallabhbhai stresses on building character among students at the Rashtriya Shala Board meeting, Karadi in Jalalpore district.)**
54. Young men and women are to build up a strong character. A nation's greatness was reflected in the character of her people. If it was sullied by selfishness, such people could not prosper or achieve great things. Selfishness had its place in life as everyone had to look to his own needs and that of his family, but it could not be made the be – all and end – all of life.  
**(Date: 13 June 1935, Occasion: Advising young men and women to build up a strong character at Maharashtra Youth Congress)**
55. The main task before India today is to consolidate herself into a well-knit and united power...  
**(Date: 11 August 1947, Occasion: Speaking to Delhi Citizens during Liberty Celebrations)**
56. Caste, community will rapidly disappear. We have to speedily forget all these things. Such boundaries hamper our growth.  
**(Date: 16 April 1946, Occasion: Assuring Harijans a Place of Honour in Independent India during a Lecture delivered at Patidar Students Hostel at Vadodra.)**
57. Religion is a matter between the man and his Maker.  
**(Date: 15 May 1950, Occasion: Addressing a public meeting at Ernakulam)**
58. We have tried to overcome our weaknesses honestly and in a definite manner. The proof, if any proof is needed, is Hindu-Muslim unity... Similarly, we have established cordial relations with Parsis, Christians and other citizens of the country.  
**(Date: 28 December 1921, Occasion: Speaking at Reception Committee of 36<sup>th</sup> Session of Indian National Congress at Ahmedabad)**
59. "Manpower without unity is not a strength unless it is harmonized and united properly; then it becomes a spiritual power."
60. "Faith is of no evil in the absence of strength. Faith and strength are both essential for accomplishing great work."
61. "Take to the path of dharma—the path of truth and justice.

Don't misuse your valor. Remain united."

62. "Work is worship, duty is God — that is the essence of true devotion."
63. The stiffer the opponent, the more our affection should go out to him. That is the test of our non-violence."
64. "No one would die of starvation in independent India. Its grains would not be exported for profit but used to feed the poor."
65. "Ours is a democratic country. All must work in unity to uplift the nation, leaving behind personal differences."
66. "Freedom is something that needs to be constantly protected through courage, unity, and discipline."
67. "A nation's greatness lies in its ability to maintain peace while preparing for the worst."
68. "Discipline and united action are the real sources of strength for the nation."
69. "Freedom is not a reward or gift, but an outcome of continuous struggle."
70. "It is in the fitness of things that the strong should be just and the weak should be brave."
71. ".Work is undoubtedly worship, but laughter is life. Anyone who takes life too seriously must prepare himself for a miserable existence."
72. "Your goodness is bound to face opposition. But the fire of truth will always burn bright."
73. "A united nation is always respected and its citizens live with dignity."
74. "Every citizen of India must remember that he is an Indian and he has every right in this country, but with certain duties."
75. "There is something unique in this soil, which, despite many obstacles, has always remained the abode of great souls."

76. "In a domestic Government, unity and co-operation are essential requisites."
77. "By common endeavor we can raise the country to a new greatness, while a lack of unity will expose us to fresh calamities."
78. Faith is of no evil in absence of strength. Faith and strength, both are essential to accomplish any great work."

## **Bibliography**

1. [Wikipedia: National Unity Day \(India\)](#)
2. [PIB India: Press Note on National Unity Day 2025](#)
3. Times of India Reports, 2025
4. Ministry of Education Official X Post
5. [Finology Blog and India Today Articles on Sardar Patel](#)
6. Study IQ: official YouTube channel- for Video on Sardar Vallabhbhai Patel

Compiled on 30<sup>th</sup> Oct 2025

Team Library